



नवसर्जन संस्कृति

PRGI No. GJHIN/25/A2786

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 01

अंक : 265

दि. 28.06.2026,

रविवार

पाना : 04

किंमत : 00.50 पैसा

भारत-सेशेल्स संबंधों को नई उड़ान: 50 वर्षों की मित्रता का स्वर्णिम अध्याय, हिंद महासागर में सुरक्षा, विकास और रणनीतिक साझेदारी को मिलेगा नया विस्तार

विक्टोरिया (सेशेल्स)। हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की बढ़ती रणनीतिक सक्रियता और पड़ोसी देशों के साथ मजबूत होने संबंधों के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सेशेल्स यात्रा को ऐतिहासिक और दूरगामी महत्व का माना जा रहा है। तीन दिवसीय आधिकारिक दौर पर शनिवार को सेशेल्स पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राजधानी विक्टोरिया में राष्ट्रपति पैट्रिक हमर्मीने ने गर्मजोशी से स्वागत किया। इस वर्ष भारत और सेशेल्स के बीच राजनयिक संबंधों के 50 वर्ष पूरे हो रहे हैं और ऐसे विशेष अवसर पर प्रधानमंत्री की यात्रा दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी, समुद्री सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक रिश्तों को नई दिशा देने वाली मानी जा रही है। प्रधानमंत्री मोदी इस दौरान सेशेल्स के 50वें राष्ट्रीय दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे, जो दोनों देशों के बीच गहरे विश्वास और घनिष्ठ संबंधों का प्रतीक माना जा रहा है।

सेशेल्स पहुंचने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति पैट्रिक हमर्मीने ने नेशनल बॉटैनिकल गार्डन का संयुक्त दौरा किया। दोनों नेताओं ने यहां विश्व प्रसिद्ध अल्डाबरा

प्रजाति के विशालकाय कछुओं को भोजन खिलाया और प्राकृतिक संरक्षण से जुड़े प्रयासों की जानकारी भी ली। इस आत्मीय मुलाकात ने यह संदेश दिया कि भारत और सेशेल्स के संबंध केवल कूटनीतिक और सामरिक स्तर तक सीमित नहीं हैं, बल्कि दोनों देश पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता और सतत विकास जैसे वैश्विक मुद्दों पर भी साझा सोच रखते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी यात्रा को दोनों देशों के बीच आधी सदी से अधिक समय से चले आ रहे भरोसे, मित्रता और सहयोग के रिश्तों का उत्सव बताया। उन्होंने कहा कि सेशेल्स हिंद महासागर क्षेत्र में भारत का अत्यंत महत्वपूर्ण समुद्री साझेदार है और भारत की 'सागर' यानी क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास की नीति में उसकी विशेष भूमिका है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और सेशेल्स के संबंध आपसी विश्वास, लोकतांत्रिक मूल्यों, कानून के शासन, सांस्कृतिक विविधता के सम्मान और जनता के बीच गहरे जुड़ाव पर आधारित हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि फरवरी 2026 में राष्ट्रपति पैट्रिक हमर्मीने की भारत यात्रा के बाद अब उनकी यह यात्रा द्विपक्षीय संबंधों को और



अधिक व्यापक तथा मजबूत बनाएंगी।

प्रधानमंत्री मोदी की यह यात्रा ऐसे समय में हो रही है जब हिंद महासागर क्षेत्र वैश्विक रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का प्रमुख केंद्र बन चुका है। समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री संसाधनों का संरक्षण और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे विषय अंतरराष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में हैं। ऐसे में भारत लगातार अपने समुद्री पड़ोसी देशों के साथ सहयोग बढ़ाने की नीति पर आगे बढ़ रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि सेशेल्स के साथ भारत की बढ़ती साझेदारी केवल द्विपक्षीय

संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता और सामूहिक सुरक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस यात्रा के दौरान सेशेल्स की नेशनल असेंबली को संबोधित करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री भी बनेंगे। इसे दोनों देशों के लोकतांत्रिक संबंधों और संसदीय सहयोग की दृष्टि से एक ऐतिहासिक उपलब्धि माना जा रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री का संसद को संबोधित करना इस बात का संकेत है कि दोनों देश केवल रक्षा और आर्थिक

सहयोग तक सीमित नहीं रहना चाहते, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं, सुशासन, विधायी अनुभवों और जनप्रतिनिधियों के बीच संवाद को भी नई मजबूती देना चाहते हैं। प्रधानमंत्री अपने दौरे के दौरान सेशेल्स में बसे भारतीय समुदाय से भी मुलाकात करेंगे। उन्होंने कहा कि भारतीय मूल के लोगों ने दशकों से दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय समुदाय आज सेशेल्स की आर्थिक, सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है तथा दोनों देशों के बीच मित्रता का जीवंत सेतु है। रविवार 29 जून को आयोजित होने वाले सेशेल्स के 50वें राष्ट्रीय दिवस समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। इस दौरान कई महत्वपूर्ण द्विपक्षीय बैठकों, समझौतों और सहयोग से जुड़े विषयों पर भी चर्चा होने की संभावना है। माना जा रहा है कि समुद्री सुरक्षा, तटीय निगरानी, समुद्री अवसंरचना, रक्षा सहयोग, डिजिटल साझेदारी, स्वास्थ्य, शिक्षा, क्षमता निर्माण और बन्तु इकोनॉमी जैसे क्षेत्रों में कई नई पहल सामने

आ सकती हैं। भारत पहले भी सेशेल्स को तटीय निगरानी प्रणाली, समुद्री सुरक्षा उपकरण, गश्ती नौकाएं और प्रशिक्षण सहायता उपलब्ध कराता रहा है। ऐसे में इस यात्रा के दौरान इन सहयोग कार्यक्रमों को और विस्तार मिलने की संभावना जताई जा रही है। भारत और सेशेल्स के संबंध केवल पिछले पांच दशकों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनकी ऐतिहासिक जड़ें लगभग ढाई सौ वर्ष पुरानी हैं। वर्ष 1770 में जब सेशेल्स में पहली स्थायी बस्ती बसाई गई थी, तब वहां पहुंचे 27 लोगों में पांच भारतीय भी शामिल थे। इसके बाद बिहार, गुजरात और तमिलनाडु सहित भारत के विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में लोग रोजगार और व्यापार के उद्देश्य से सेशेल्स पहुंचे और वहीं निपटने के लिए भारत और सेशेल्स लगातार मिलकर काम कर रहे हैं। भारत समय-समय पर सेशेल्स को नौसैनिक प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता, समुद्री निगरानी प्रणाली और मानवीय सहायता भी उपलब्ध कराता रहा है। इससे दोनों देशों के बीच विश्वास और रणनीतिक सहयोग

से जुड़े हुए हैं। विशेष महत्व की बात यह भी है कि सेशेल्स के राष्ट्रपति पैट्रिक हमर्मीने के पूर्वजों का संबंध भी भारत के बिहार राज्य से बताया जाता है। इस ऐतिहासिक और भावनात्मक जुड़ाव के कारण प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा को केवल कूटनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि साझा विरासत और सांस्कृतिक संबंधों के उत्सव के रूप में भी देखा जा रहा है। रक्षा और समुद्री सहयोग दोनों देशों की साझेदारी का सबसे महत्वपूर्ण आधार बनकर उभरा है। हिंद महासागर विश्व व्यापार का एक प्रमुख समुद्री मार्ग है, जहां से वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति और व्यापार का बड़ा हिस्सा गुजरता है। इस क्षेत्र में समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ना, मानव तस्करी, मादक पदार्थों की तस्करी और प्राकृतिक आपदाओं जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए भारत और सेशेल्स लगातार मिलकर काम कर रहे हैं। भारत समय-समय पर सेशेल्स को नौसैनिक प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता, समुद्री निगरानी प्रणाली और मानवीय सहायता भी उपलब्ध कराता रहा है। इससे दोनों देशों के बीच विश्वास और रणनीतिक सहयोग

लगातार मजबूत हुआ है। बन्तु इकोनॉमी यानी समुद्री संसाधनों के सतत और सेशेल्स के बीच सहयोग तेजी से बढ़ रहा है। मत्स्य पालन, समुद्री जैव विविधता, समुद्री पर्यटन, नवीकरणीय ऊर्जा और समुद्री अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में दोनों देश संयुक्त परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले वर्षों में बन्तु इकोनॉमी भारत-सेशेल्स संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक आधार बन सकती है। विदेश नीति के जानकारों के अनुसार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह यात्रा ऐसे समय में हो रही है जब हिंद महासागर क्षेत्र में विभिन्न वैश्विक शक्तियों की रणनीतिक सक्रियता लगातार बढ़ रही है। ऐसे परिदृश्य में भारत अपने विश्वसनीय साझेदार देशों के साथ संबंधों को मजबूत कर क्षेत्रीय स्थिरता, स्वतंत्र समुद्री आवागमन और नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा देना चाहता है। सेशेल्स इस रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसी कारण प्रधानमंत्री की यात्रा को व्यापक भू-राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

200 वर्षों से कायम है भाईचारे की मिसाल: चतुर्भुज नारायण मंदिर के सामने 37 ताजियों ने दी सलामी, दतिया में गूंजी गंगा-जमुनी तहजीब की अनोखी परंपरा

दतिया। ऐसे समय में जब समाज में अक्सर धार्मिक मतभेदों और सामाजिक तनाव की खबरें सुर्खियां बनती हैं, मध्य प्रदेश के दतिया जिले का छोटा-सा कस्बा भांडेर एक बार फिर देश के सामने सांप्रदायिक सौहार्द, आपसी सम्मान और गंगा-जमुनी संस्कृति की ऐसी मिसाल बनकर उभरा, जिसने हर किसी का दिल जीता लिया। मोहरम के अवसर पर यहां निकाले गए पारंपरिक ताजिया जुलूस में एक बार फिर लगभग दो सौ वर्षों से चली आ रही ऐतिहासिक परंपरा का निर्वहन किया गया। यह, बल्कि भारतीय संस्कृति की उस साझी विरासत का जीवंत उदाहरण था, जहां आस्था का सम्मान धर्म की सीमाओं से ऊपर उठकर किया जाता है।



मंदिर के सामने रुके और भगवान चतुर्भुज नारायण की ओर सम्मान प्रकट करते हुए सलामी दी। दूसरी ओर मंदिर परिसर में पहले से मौजूद पुजारियों ने ताजियों का पुष्पमालाओं से स्वागत किया। इस दौरान मंदिर परिसर और आसपास का क्षेत्र दोनों समुदायों के लोगों से खचाखच भरा हुआ था। उपस्थित लोगों ने इस दृश्य का स्वागत तालियों और जयघोष के साथ किया। कई लोगों ने इसे भारतीय संस्कृति की सबसे सुंदर तस्वीर बताया, जहां अलग-अलग आस्थाओं के लोग एक-दूसरे की परंपराओं का सम्मान करते हुए सद्भाव का संदेश देते दिखाई दिए।

स्थानीय लोगों के अनुसार यह परंपरा कोई नई नहीं, बल्कि दो शताब्दियों से अधिक पुरानी है। पीढ़ी दर पीढ़ी इस परंपरा का पालन होता आ रहा है और हर वर्ष मोहरम के अवसर पर ताजिज मंदिर के सामने पहुंचकर सलामी देते हैं। वर्षों के

बदलते दौर, सामाजिक परिस्थितियों और राजनीतिक उतार-चढ़ाव के बावजूद इस परंपरा की निरंतरता यह दर्शाती है कि भांडेर की सामाजिक एकता और पारस्परिक विश्वास समय की कसीटी पर हमेशा खरा उतरता है। इस परंपरा के पीछे एक

ऐतिहासिक और भावनात्मक कथा भी जुड़ी हुई है, जिसे स्थानीय लोग आज भी बड़े गर्व के साथ सुनाते हैं। मान्यता है कि कई वर्ष पहले कस्बे के प्रसिद्ध सैतलाई तालाब से भगवान चतुर्भुज नारायण को प्रतिमा एक मुस्लिम हजारी परिवार को प्राप्त हुई थी। परिवार ने इस प्रतिमा को अत्यंत श्रद्धा के साथ स्थानीय लोगों को सौंपा। बाद में उसी परिवार के सहयोग से मंदिर का निर्माण कराया गया और उसके रखरखाव के लिए भूमि भी दान में दी गई। तभी से यह परंपरा शुरू हुई कि मोहरम के अवसर पर ताजिए मंदिर पहुंचकर भगवान को सम्मान अर्पित करेंगे और मंदिर की ओर से भी उनका स्वागत किया जाएगा। यह घटना आज भी स्थानीय लोगों के लिए इस बात का प्रतीक है कि आस्था का सम्मान किसी धर्म विशेष तक सीमित नहीं होता। मंदिर के पुजारियों ने इस अवसर पर कहा

कि यह परंपरा केवल धार्मिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि प्रेम, विश्वास और सामाजिक समरसता का उत्सव है। उन्होंने बताया कि हर वर्ष वे पूरे सम्मान के साथ ताजियों का स्वागत करते हैं और दोनों समुदायों के लोग मिलकर इस आयोजन को सफल बनाते हैं। पुजारियों का कहना है कि भगवान के दरबार में सभी समाज हैं और यही संदेश इस परंपरा के माध्यम से समाज तक पहुंचता है।

इस आयोजन का सबसे भावुक क्षण तब आया, जब हजारी परिवार की बुजुर्ग महिला को विशेष पालकी में बैठाकर मंदिर परिसर तक लाया गया। स्थानीय परंपरा के अनुसार जुलूस तभी आगे बढ़ता है जब हजारी परिवार का कोई सदस्य इस आयोजन में उपस्थित होकर अपनी सहमति और आशीर्वाद देता है। ग्रामीण बताते हैं कि स्वतंत्रता से पहले भी कस्बे में कोई बड़ा धार्मिक आयोजन या सार्वजनिक जुलूस तब तक प्राप्थ नहीं होता था, जब तक हजारी परिवार का प्रतिनिधि उसमें शामिल न हो। आज परिवार की केवल एक बुजुर्ग महिला जीवित हैं और परंपरा के सम्मान में उन्हें विशेष रूप से इस आयोजन में लाया जाता है। उनके उपस्थित होने और आशीर्वाद देने के बाद ही ताजिया जुलूस आगे बढ़ता है। यह दृश्य वहां मौजूद लोगों के लिए अत्यंत भावुक और प्रेरणादायक रहा।

अफगानिस्तान में तेज भूकंप से दहला उत्तर भारत: हिंदू कुश में 6.2 तीव्रता के झटके, कश्मीर से दिल्ली-एनसीआर तक महसूस हुई कंपन, कई राज्यों में दहशत

नई दिल्ली। अफगानिस्तान के भूकंपीय दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील हिंदू कुश पर्वतीय क्षेत्र में शनिवार शाम आए 6.2 तीव्रता के शक्तिशाली भूकंप ने पूरे उत्तर भारत को हिला दिया। भूकंप के तेज झटके जम्मू-कश्मीर से लेकर दिल्ली-एनसीआर, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश के अनेक हिस्सों में स्पष्ट रूप से महसूस किए गए। अचानक धरती कांपने से लोगों में अफरा-तफरी मच गई और हजारों लोग एहतियात के तौर पर अपने घरों, कार्यालयों और बहुमंजिला इमारतों से बाहर निकल आए। कुछ स्थानों पर लोग काफी देर तक खुले मैदानों और सड़कों पर खड़े रहे, जबकि प्रशासन ने भी स्थिति पर लगातार नजर बनाए रखी। राहत की बात यह रही कि समाचार लिखे जाने तक भारत में किसी प्रकार के जान-माल के नुकसान या किसी हताहत की आधिकारिक सूचना नहीं मिली थी। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार भूकंप का केंद्र अफगानिस्तान के हिंदू कुश क्षेत्र में स्थित था और इसकी गहराई लगभग 215 किलोमीटर दर्ज की गई। विशेषज्ञों का कहना है कि भूकंप का केंद्र पृथ्वी की सतह से काफी अधिक गहराई में होने के कारण इसकी ऊर्जा दूर-दूर तक फैल गई, जिसके चलते सैकड़ों किलोमीटर दूर स्थित भारत के कई राज्यों में भी झटके महसूस किए गए। सामान्यतः गहरे भूकंप सतह पर अपेक्षाकृत कम नुकसान पहुंचाते हैं, लेकिन उनका प्रभाव बड़े भौगोलिक क्षेत्र में महसूस किया जा सकता है। यही कारण रहा कि राजधानी दिल्ली सहित उत्तर भारत के अनेक शहरों में लोगों ने कुछ सैकंड तक धरती में कंपन महसूस किया। दिल्ली-एनसीआर के कई इलाकों में



लोग अचानक घरों और कार्यालयों से बाहर निकल आए। कंची इमारतों में रहने वाले लोगों ने बताया कि उन्हें फर्नीचर और पंखों में कंपन महसूस हुआ। कई कार्यालयों में सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत कर्मचारियों को तत्काल बाहर निकाला गया। जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के कई जिलों से भी भूकंप के झटके महसूस किए जाने की सूचना मिली। हालांकि कहीं से भी किसी बड़ी क्षति की जानकारी सामने नहीं आई।

विशेषज्ञों के अनुसार हिंदू कुश क्षेत्र दुनिया के सबसे सक्रिय भूकंपीय क्षेत्रों में से एक माना जाता है। भारतीय और यूरेशियन टेक्टोनिक प्लेटों के लगातार टकराने के कारण इस क्षेत्र में समय-समय पर मध्यम से लेकर तीव्र भूकंप आते रहते हैं। कई बार यहां आने वाले भूकंपों का प्रभाव अफगानिस्तान के अलावा पाकिस्तान, भारत, ताजिकिस्तान और मध्य एशिया के अन्य देशों तक भी महसूस किया जाता है। भूवैज्ञानिकों का कहना है कि इस क्षेत्र में प्लेटों की जटिल संरचना और गहराई में होने वाली भूगर्भीय गतिविधियां इसे लगातार संवेदनशील बनाए रखती हैं। अफगानिस्तान में आए इस शक्तिशाली भूकंप से पहले पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में भी लगातार भूकंपीय गतिविधियां

किगरी क्षेत्रों में देखा गया, जहां कई मकानों को नुकसान पहुंचा है। स्थानीय प्रशासन के अनुसार कम से कम पांच लोग घायल हुए हैं और राहत एवं बचाव दल प्रभावित इलाकों में तैनात किए गए हैं। अधिकारियों ने लोगों से सतर्क रहने और किसी भी संभावित आफ्टरशॉक की स्थिति में सुरक्षित स्थानों पर रहने की अपील की है। पाकिस्तान मौसम विभाग के मुख्य मौसम विज्ञानी अमीर हैदर लेघारी ने बताया कि हाल के दिनों में आए भूकंप एक सक्रिय फॉल्ट लाइन से जुड़े हैं। उनके अनुसार पृथ्वी की सतह के नीचे मौजूद टेक्टोनिक प्लेटों की हलचल कई बार एक क्षेत्र की भूकंपीय गतिविधियों को दूसरे क्षेत्रों की फॉल्ट लाइनों पर भी प्रभावित कर सकती है। यही कारण है कि आने वाले दिनों में क्षेत्र में और झटके महसूस होने की संभावना से पूरी तरह इनकार नहीं किया जा सकता। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी बड़े भूकंप की सटीक भविष्यवाणी करना वर्तमान वैज्ञानिक तकनीक से संभव नहीं है, इसलिए लगातार निगरानी ही सबसे प्रभावी उपाय है। बलूचिस्तान का इतिहास भी विनाशकारी भूकंपों का साक्ष्य रहा है। अक्टूबर 2021 में हरनाई क्षेत्र में आए भूकंप में लगभग

40 लोगों की मौत हो गई थी और सैकड़ों लोग घायल हुए थे। इससे पहले सितंबर 2013 में आए 7.8 तीव्रता के भीषण भूकंप ने व्यापक तबाही मचाई थी, जिसमें करीब 350 लोगों की जान चली गई थी और हजारों मकान क्षतिग्रस्त हो गए थे। विशेषज्ञों का कहना है कि इस पूरे क्षेत्र की भौगोलिक संरचना अत्यंत संवेदनशील है और यहां भविष्य में भी भूकंपीय गतिविधियां जारी रहने की संभावना बनी रहती है।

भारत भी भूकंप की दृष्टि से संवेदनशील देशों में शामिल है। हिमालयी क्षेत्र, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर-पूर्वी राज्य, गुजरात तथा दिल्ली-एनसीआर सहित कई हिस्से उच्च भूकंपीय जोखिम वाले क्षेत्रों में आते हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण समय-समय पर लोगों को भूकंप के दौरान सावधानी बरतने और आपदा प्रबंधन संबंधी दिशा-निर्देशों का पालन करने की सलाह देता है। विशेषज्ञों का कहना है कि भूकंप के समय घबराने के बजाय सुरक्षित स्थान पर जाना, लिफ्ट का उपयोग न करना, बिजली और गैस उपकरणों से दूरी बनाए रखना तथा आफ्टरशॉक की आशंका को ध्यान में रखते हुए सतर्क रहना बेहद आवश्यक है।

इस बीच सोशल मीडिया पर दुनिया के अन्य हिस्सों, विशेषकर वेनेजुएला में बड़े भूकंप और भारी जनहानि से जुड़े कुछ दावे भी तेजी से प्रसारित हुए। हालांकि इन दावों की किसी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय भूकंप निगरानी संस्था अथवा आधिकारिक सरकारी स्रोत से पुष्टि नहीं हुई है। विशेषज्ञों ने लोगों से अपील की है कि वे केवल अधिकृत एजेंसियों द्वारा जारी सूचनाओं पर ही भरोसा करें और अपुष्ट खबरों या अफवाहों को साझा करने से बचें।



नवसर्जन संस्कृति

हिन्दी



JioTV

CHENNAL NO. 2063



Jio FIBER

Jio Air Fiber



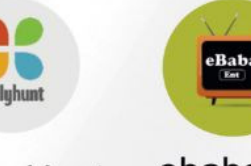
Jio tv+

Jio Tv +



Jio Fiber

Jio Fiber



Daily Hunt

Daily Hunt



ebaba Tv

ebaba Tv



Dish Plus

Dish Plus



DTH live OTT

DTH live OTT



Rock TV

Rock TV



Airtel

Airtel



Amezone Fire

Amezone Fire



Roku

Roku Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही नवसर्जन संस्कृति हिंदी चैनल देखिये

संपादकीय

**चढ़ावे की चोरी के
दोषी बख्शो न जाएं**

अयोध्या में राम मंदिर में भक्तों द्वारा दिए दान और श्रीकृष्णजी सामान की हारेफेरी की घटनाओं ने देश-विदेश के रामभक्तों को विचलित किया है। कभी आमजन में कहा जाता था कि 'भगवान से डर', लेकिन पैसे की लालच सब देखिए कि मंदिर प्रबंधन से जुड़े चंद लोगों ने भगवान के घर में चोरी करने में कोई डर महसूस नहीं किया। ये प्रबंधन व व्यवस्था की पारदर्शिता की खोट तो है ही, मानवीय मूल्यों के पतन की पराकाष्ठा भी है। चोरी में चढ़ावे की देखरेख को तैनात लोग ही हैं जो चोरी-चंदरों में लिप्त हो जाते। इस मामले में विपक्ष के तीखे हमले और जनक्रोध के बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने गाइड की जांच के लिए आनन-फानन में एएसआईटी मणिलाल की रीढ़ राज्य सरकार को सौंपी, प्राथमिकी दर्ज की और वीरवार को प्रबंधन से जुड़े आठ कर्मचारियों की गिरफ्तारी भी हो गई। लेकिन उपेक्षापूर्ण आराध्य रूप के चढ़ावे की चोरी से आहत भक्तों के जख्मों पर शायद भी नहीं महसूस लागी, जब दोषियों को सख्त सजा दी जाएगी। निश्चित ही यह चोरी का बड़ाकरण भाजपा व संघ को परेशान करने वाला है। उत्तर प्रदेश राजनीति और दल के लिये, जिसके कभी दो सांसद चुना करते थे राम भक्तों की आस्था की मुहिम से हासिल जनसमर्थन से केंद्र व राज्य राज्यों में उसकी सरकारें बननी हैं। खासकर, भाजपा के लिए यह युवा परेशानी का सबब हो सकता है क्योंकि राम जन्म भूमि वाला प्रदेश में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। जिस मुद्दे को लेकर भाजपा राज्य की सत्ता में आती रही है, उससे मुद्दे पर विपक्ष हमलावर होगा। निस्तब्ध, इस बड़ाकरण से राम भक्तों की आस्था को गहरी चोट तो पहुंचनी है। सवाल राम मंदिर ट्रस्ट की नाकामी पर भी उठेगी कि उसने समय रहते इस चोरी को क्यों नहीं पकड़ा। बेहतर होता कि राष्ट्रीय के खिलाफ भक्तों की तरफ से स्वतः प्राथमिकी दर्ज करके कार्रवाई की जायें। सवाल पूछा जा सकता है कि आक्षेप क्यों ट्रस्ट के नतीजों का हिासब-किताब विश्वसनिय तरीके से नहीं रख पाया।

दुष्ट की साख भी दांव पर लगी है। वह उन भक्तों की भवनाओं की रक्षा नहीं कर पाया, जिन्होंने मंदिर निर्माण से लेकर अब तक दिल खोलकर दान दिया। जजब चंदा प्रबंधन से जुड़े लोगों के घर से लाखों की नकदी बरामद हुई और चोरी के पैसे से जमीन खोदने के आरोप सामने आए तो भक्तों की आस्था पर आंशिक आना स्थापनागिक हो गई। आरोप नकदी के हेफेरे के ही नहीं लगे बल्कि कीमती गहनों को खुदबुद कर देने के भी लगे। वहीं प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के दौरान दान में मिली चांदी की छड़ों के गायब होने का भी आरोप लगा। बहरहाल, 2027 के यूपी विधानसभा चुनावों से कुछ नहीने पहले सामने आए इस विचार ने प्रेसा में राजराजनीतिक हलचल मचा दी है। विपक्ष जहां दोषियों पर समर रहते कारवाइड न करने का आरोप लगा रहा है, वहीं भाजपा इन आरोपों को अयोग्या को बदाना करने और धार्मिक भवनाओं को ठेस पहुंचाने की कोशिश बता रही है। वहीं दूसरी ओर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने धैर्य रखने की अपील करते हुए कहा कि निधन भक्तों ने मंदिर निर्माण के लिए पापों से मुक्त होकर इतना दान दिया है कि इस रमाणाक मामले की तह तक जाने के लिये एक पारदर्शी और समय-सीमा के भीतर होने वाली जांच बेहद जरूरी है। वहीं दूसरी ओर विपक्षी आंदोल चंदे के रंगांक को सार्वजनिक करने और स्वतंत्र ऑडिट की मांग कर रही है। उनका कहना है कि पारदर्शीता के दान और धार्मिक आस्था से जुड़े मामले में कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। निम्नित रूप से वह प्रकरण देश के बड़े धार्मिक संस्थानों चंदे के प्रबंधन में पारदर्शीता व सतर्कता की मांग सतर्कता है। चंदे का नियमित ऑडिट किया जाना, सतर्कता आधारित प्रबंधन, डिजिटल ट्रैकिंग और स्वतंत्र निगरानी वाले आधुनिक सिस्टम की जरूरत को दर्शाता है। निस्संदेह, राम मंदिर भारत व विदेशों में से करोड़ों श्रद्धालुओं की आकांक्षा का प्रतीक है। श्रद्धालुओं का भरोसा बनाने रखने के लिये हर आक्षेप की पारदर्शीता से जांच जरूरी है।

આભેયાન

भक्ति: वह दिव्य शक्ति जो मनुष्य को ईश्वर से जोड़कर जीवन को सार्थक बना देती है

परिवर्तन संस्कृति का मूल आधार यदि कहें सके वना "भक्ति" शब्द का अर्थ है कि शब्द में व्यक्त किया जाय, तो वह शब्द है— भक्ति । भक्ति मूल्य को स्वयं का बोध करता है, कर्म उसे कर्तव्य का मार्ग दिखाता है, योग उसे आत्मसंयम सिखाता है, लेकिन भक्ति वह इंद्रिय है जो सीधे जीवन्-मुक्ति को परमात्मा से जोड़ देती है । भक्ति केवल पूजा-पाद, मंदिर जाने या भजन करने का नाम नहीं है, बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षण में ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने की क्षमता है । जब मनुष्य का मन, बुद्धि, भाषा और कर्म ईश्वर को समर्पित हो जाते हैं, तब भक्ति का वास्तविक जीवन होता है । इसलिए संसार में कहा है कि भक्ति वह अमृत है, जो संतों के शिष्यों को भी मधुर बना देता है ।

शब्दालोक में कहा गया है कि मनुष्य का जीवन ईश्वर के प्रेम का संयोग है, मनुष्य का जोन ईश्वर के अन्तः-चक्र से भरा हुआ है । भक्त, पद, अंततः भक्ति वन के बाढ़ भी कदम मनुष्य के भीतर एक खालीपन बना रहता है । भक्त मनुष्य के बाढ़ खालीपन किसी भीकत संतु से नहीं भर सकते । इसे केवल ईश्वर का प्रेम भर सकता है । यही प्रेम जब समर्पण का रूप ले लेता है, तब वह भक्ति कहलाता है । भक्ति मनुष्य को बाढ़ अमृत करता है कि वह अशक्त नहीं है । प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वर उसके साथ हैं और यही भक्ति जीवन के वास्तविक आधार हैं ।

भक्ति का सामान्य अर्थ है—प्रेमपूर्ण ईश्वर की श्रवण, कीर्तन, प्रहण करना । संस्कृत में "भज" धातु से

बना" भक्ति शब्द सच्चा, प्रेम, श्रद्धा और सम्पूर्ण का धोतक है। जिस मनुष्य किसी स्वार्थ के बिना भगवान को अपना सर्वस्व मान लेता है, तब वह सच्चा भक्त कहलाता है। ऐसी भक्ति में कोई व्यापार नहीं होता। भक्त यह नहीं कहता कि मुझे इतना धन दो, इतना सुख दो या मेरी सभी इच्छाएँ पूरी कर दो। वह केवल इतना कहता है—"हे प्रभु! मुझे अपनी इच्छा के अनुसार चलने की शक्ति प्रदान करे"।

विद्यार्थी भक्ति का प्रथम चरण है। जिस प्रकार बीज के बिना वृक्ष उत्पन्न नहीं हो सकता, उसी प्रकार विद्यार्थी के बिना भक्ति विकसित नहीं हो सकती। जिस मनुष्य वह मान लेता है कि इस सृष्टि का संचालन किसी परम चेतना द्वारा हो रहा है और वही परम सत्ता उसके जीवन की संरक्षक है, तब उसके भीतर श्रद्धा का अंकुर फूटता है। यह श्रद्धा धीरे-धीरे प्रेम में बदलती है और प्रेम अंततः भक्ति बन जाता है।

कई बार लोग कनिष्ठानुष्ठान में ही भगवान को याद करते हैं। संकट समान होते ही उनका विश्वास भीतम हो जाता है। यह भक्ति नहीं, आवश्यकता है। सच्ची भक्ति सुख और दुःख दोनों में समान रहती है। भक्त भगवान को केवल संकटमोचक नहीं मानता, बल्कि अपने जीवन का आधार मानता है।

भावगत रूप में भक्ति के नौ स्वरूप बताए गए हैं, जिन्हें नवधा भक्ति कहा जाता है। ये हैं— श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन,

दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।
क्रैस्त का अर्थ है भगवान की कथा सुनना।
श्रवण का अर्थ है उन्के दायणी का गान करना।
स्मरण का अर्थ है प्रत्येक क्षण उनका चिंतन करना।
पासेवेन भावना की सेवा का प्रतीक है।
हैं। अर्चना पूजा के माध्यम से श्रद्धा व्यक्त करना है।
वंदन नम्रतापूर्वक प्रणाम करना है। दास्य
भाव में स्वयं को भावना का सेवेक मानना है।
सख्य भाव में उन्हें अपना मित्र समझना है और
आत्मनिवेदन का अर्थ है अपने सम्पूर्ण अस्तित्व
को ईश्वर के चरणों में समर्पित कर देना।
इन्मने से किसी एक मार्ग पर भी चक्कर मनुष्य
परमात्मा की कृपा प्राप्त कर सकता है। इसलिए
शास्त्र कहते हैं कि भक्ति के लिए विद्वान होना
आवश्यक नहीं, बल्कि सरल हृदय होना
आवश्यक है।
जहाँ प्रेम है, वहाँ भक्ति है। लेकिन यह प्रेम
संस्कार के प्रेम से भिन्न होता है। सांसारिक प्रेम
अपेक्षाओं पर आधारित होता है, जबकि ईश्वर
का प्रेम निःस्वार्थ होता है। भक्त भावना से कुछ
माँगता नहीं, बल्कि स्वयं को अर्पित कर देता है।
मीरा ने महलों का त्याग कर केवल श्रीकृष्ण को
अपनाया। श्रीहनुमान ने प्रभु श्रीराम की सेवा में
अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। ब्रह्मद
ने मृत्यु का भय भी स्वीकार कर लिया, लेकिन
भावना का नाम नहीं छोड़ा। इन सभी उदाहरणों
से स्पष्ट होता है कि सच्ची भक्ति में त्याग है,
विश्वास है और अटूट प्रेम है।

महत्त्वा का सबसे बड़ा शुरु उसका अंशों मन है। क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या और अहंकार मन को निश्चित अशांत रखते हैं। भक्ति इन विकारों को धीरे-धीरे समाप्त करती है। जब मन भावान के नाम में लगता लगता है, तब तत्कालात्मक विचारों का प्रभाव कम होने लगता है। जैसे सूर्य निकलते ही अंधकार स्वतः समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार भक्ति का प्रकाश मन के अंधकार को दूर कर देता है।

भक्ति का अर्थ संसार से भागना नहीं है। इसका अर्थ संसार में रहते हुए भी ईश्वर से जुड़े रहना है। गृहस्थ, विद्यार्थी, व्यापारी, अंतर्द्वी का किसी-न किसी भी व्यक्ति अपने जीवन काय करते हुए भक्त बन सकता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में भी यही शिक्षा दी कि अपने कर्तव्य का पालन करते हुए मन को ईश्वर में स्थिर रखो।

आकर भक्ति का सबसे बड़ा शुरु है। जहाँ "मैं" अधिक होता है, वहाँ भगवान के बड़ा स्थान कम हो जाता है। भक्त स्वयं को बड़ा नहीं मानता। वह जानता है कि जो कुछ भी है, वह ईश्वर की कृपा से है। यही विमर्श उसे महान बनाती है। जिस दिश में मनुष्य वह स्वीकार कर लेता है कि वह केवल ईश्वर का एक साधन है, उसी दिश में उसके भीतर भक्ति का वास्तविक जन्म होता है।

आधुनिक विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि सकारात्मक भावनाएँ मनुष्य के मस्तिष्क और शरीर पर गहरा प्रभाव डालती हैं। निर्यतित प्रार्थना, ध्यान, जप और भजन से तनाव कम

होता है, मानसिक संतुलन बढ़ता है और जीवन के प्रति आशा उत्पन्न होती है। जब मनुष्य भवभाव के प्रति कुतूहल व्यक्त करता है, तब उसके भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संस्कार होता है। यही कारण है कि भक्त कठिन परिस्थितियों में भी टूटने नहीं, बल्कि और अधिक मजबूत बनकर उभरते हैं।

इसकी सच्ची पुष्टि केवल मंदिर में दीप जलाने से पूरी नहीं होती। यदि किसी भूखे को भोजन मिला, किसी दुखी को सांत्वना मिली, किसी गरीब की सेवा हुई और किसी निपरा व्यक्ति को आशा मिली, तो यही सर्वोत्तम भक्ति है। संत कबीर ने कहा है कि यदि ईश्वर को पाना है, तो पहले मनुष्य से प्रेम करना सीखो। सेवा में किया गया प्रत्येक कार्य भगवान तक पहुँचता है।

भक्ति किसी एक दिन में उत्पन्न नहीं होती। यह निरंतर अभ्यास और श्रद्धा से विकसित होती है। प्रतिदिन कुछ समय भगवान के नाम का जप करो। धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करो। सत्संग में जाओ। अपने जीवन में सत्य, करुणा और ईमानदारी को स्थान दें। भोजन करने से पहले ईश्वर का स्मरण करो। प्रत्येक सकलता के लिए उनका धन्यवाद करो और प्रत्येक कठिनाई को भी उनकी शिक्षा समझकर स्वीकार करो। धीरे-धीरे मन भगवान की ओर आकर्षित होने लगेगा।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भक्ति दिखावे से नहीं आती। ऊँची आवाज में भजन गाने से अधिक महत्वपूर्ण है कि मन भीतर से निर्मल हो।

बै-बैडू यह करने से अधिक आवश्यक है कि किसी का दिल न दुखया जाए। भगवान् बाहरी आँसु नहीं, बल्कि हृदय की पवित्रता देखते हैं। भक्ति का अंतिम फल केवल सांसारिक सुख नहीं, बल्कि अलौकिक शांति है। भक्त को यह अनुभव होने लगता है कि जो कुछ भी हो रहा वह ईश्वर की योजना का भाग है। इसलिए वह परिस्थितियों से लड़ने के बजाय उन्हें समझने लगता है। उसके भीतर भय कम हो जाता है, क्योंकि उसे विश्वास होता है कि भगवान् हर समय उसके साथ हैं। वही विश्वास उसे जीवन की सबसे बड़ी शक्ति प्रदान करता है।

जब भक्ति अपने चरम पर पहुँचती है, तब भक्त और भगवान् के बीच कोई दूरी नहीं रहती। तब मंदिर केवल पथर की इमारत नहीं रह जाता, बल्कि भक्त का हृदय भी ईश्वर का निवास बन जाता है। उसकी प्रत्येक श्वास प्रार्थना बन जाती है, प्रत्येक कर्म पूजा बन जाता है और प्रत्येक क्षण ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव कराने लगता है।

अंततः भक्ति हमें यह सिखाती है कि जीवन का सबसे बड़ा धर्म भगवान् का प्रेम है। संसार की प्रत्येक वस्तु एक दिन समाप्त हो जाएगी, लेकिन ईश्वर से जुड़ा प्रेम कभी समाप्त नहीं होता। वही प्रेम मनुष्य को भय से मुक्त करता है, दुःख में धैर्य देता है, सफलता में विनम्रता देता है और अंततः उसे परम शांति तथा मोक्ष की ओर ले जाता है।

क्याँक अब प्रमुख राजनैतिक नैरेटिव युद्ध पारंपरिक और सोशल मीडिया दोनों पर लड़ा जाता है। चुनावी जंग जीतने में मीडिया व सोशल मीडिया भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पश्चिम बंगाल चुनावों में नैरेटिव युद्ध ने भाजपा की विजय में बड़ी भूमिका निभाई थी। भाजपा की नई कार्यकारिणी से यह बात भी साफ हो गई है कि के आगामी विधानसभा चुनाव मुख्यमंत्री दिग्विजय सिन्हा के चेहरे व हिंदुत्व की धर तेज करके ही लड़ा जाएगा। प्रदेश में योगी जी का "एक रहेंगे तो नेक रहेंगे" तत्व "बटने तो कटेंगे" का नारा चलने वाला है। प्रदेश के आम हिन्दू जनमानस को योगी जी पर पूरा भरोसा है विशेषकर कानून व्यवस्था व नारी सुरक्षा आदि विषयों के कारण। प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी की अध्यक्षता में सपा के पीडीए की कार्यकुंद करने का प्रयास किया गया है। राज्य में भाजपा के पंढर 6 क्षेत्रों में विभाजित है। इनमें गठित नवनाब सिंह नागर को, ब्रज क्षेत्र में पूरन लाल लोधी तथा कानपुर

आध्यात्मिक बनाया गया ।
भाजपा की कार्यकारिणी से प्रतीत
हो रहा है कि भाजपा के तरकश
में अभी कई तीर छिपे हैं। यह बात
तो तय हो गई है कि अब भाजपा
समग्र हिंदुत्व की राजनीति करने
जा रही है। भाजपा व संघ द्वारा
अब प्रदेश में बंगाल की ही तरह
94 प्रतिशत हिंदू मतदाताओं को
एकजुट करने का प्रयास किया
जाएगा। भाजपा कार्यकारिणी
की सूची आते ही सपा, बसपा व
कांग्रेस की राजनीतिक हलचलें
भी तेज हो गई हैं। यह चर्चा भी
सूनी जा रही है कि भाजपा का
कई-कई नेतृत्व उत्तर प्रदेश सहित
कई राज्यों के चुनाव वर्ष 2026
के अक्टूबर- नवंबर में भी करवा
सकता है क्योंकि आगे जगनमो
का वृहद अभियान चलना है।
साथ ही भारतीय जनता पार्टी
पश्चिम बंगाल तथा असम सहित
कई राज्यों के निकाय चुनावों में
लगातार मिल रही सफलता से
उत्साहित है और अपनी विजय का
संवेग बनाए रखने के लिए एक
विपक्ष को तैयारी के लिए समय
नहीं देना चाहती।

नवसर्जन संस्कृति

અહમદાબાદ, દિ. 28-06-2026 રવિવાર

भरोसे के रिश्तों के कत्ल से कांपता समाज



संस्थाओं को मिलकर मंथन करना होगा। आज का युवा एक ऐसे संक्रमणकाल से गुजर रहा है, जहाँ पारंपरिक मूल्य और आधुनिक निवेशशीली के बीच गहरा द्वंद मौजूद है। एक ओर परिवार की अपेक्षाएं हैं, दूसरी ओर व्यक्तिगत रूढ़ि। संवाद के अभाव में यह द्वंद बुरे लेता है। पिछले कुछ वर्षों में देश ने श्रद्धा वालकर हत्याकांड, निष्की यादव हत्याकांड, बैंगलुरु, दिल्ली और अन्य महानगरों में प्रेम-संबंधों से जुड़े अनेक जघन्य अपराध दिखाए हैं। इन घटनाओं से स्पष्ट किया है कि प्रेम, विवाह और संबंधों को लेकर समाज में गहरी अस्थिरता एवं अविश्वास बढ़ रहा है। यह अस्थिरता केवल स्त्री या पुरुष तक सीमित नहीं है, दोनों पक्षों में हिंसक प्रतिक्रियाएं दिखाई दे रही हैं।

मोबाइल संस्कृति और डिजिटल संसार ने इस संकट को और जटिल बनाया है। मोबाइल फोन, जो कभी दूरियों को समाप्त करने का माध्यम था, आज अनेक मामलों में घड़ियं, छल और अपराध का घनबन बना जा रहा है। सोशल मीडिया ने तुलना, उपभोगवाद, स्वतंत्र सुख और आभासी संबंधों को बढ़ावा दिया है। डिजिटल दुनिया में बने रिश्ते कई बार वास्तविक जीवन की जिम्मेदारियों और मर्यादाओं से कट होतें हैं। परिणामस्वरूप धैर्य,

महानशीलता और त्याग जैसी पारिवारिक जीवन की आवश्यक विशेषताएँ कमजोर पड़ रही हैं। अयोग्य गर्भाणु पक्ष संप्रदायिक अधिवासों में उत्पाकथित 'लव जिहाद' जैसे विवादों के संदर्भ में भी सामने आता है। जब प्रेम, विवाह या संबंधों का उपयोग छल, पहचान भ्रान्तियाँ, धार्मिक परिवर्तन, अर्थविकी शोषण अथवा भावनात्मक उन्मीलन के लिए किया जाता है, तब केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि समुदायों के बीच विश्वास का भी हनन होता है। एवं आवश्यक है कि किसी भी प्रकार के संबंध पादश्रीयों, स्वेच्छा, समानता और समानगरी पर आधारित हैं। पहचान छिपाकर, धोखे से अथवा किसी वैचारिक एण्डे के तहत बनाए गए संबंध सामाजिक सौहार्द को चोट पहुँचाते हैं।

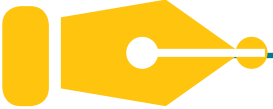
लेकिन इस विषय पर संतुलित दृष्टिकोण भी आवश्यक है। कुछ घटनाओं के आधार पर किसी समूहों समुदाय को दोषी ठहराना न केवल अयोग्यपूर्ण है, बल्कि सामाजिक सद्भाव के लिए भी घातक है। भारत की शक्ति उसकी विविधता और संप्रदायिक सौहार्द में निहित है। सदियों से विविधिभिन्न धर्मों, जातियों और संस्कृतियों के लोग यहाँ परस्पर सम्मान और विश्वास के आधार पर साथ रहते आते हैं। अतः किसी भी अपराध को अपराधी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी के रूप में देखना

पारिवारिक मूल्यों पर भी गंभीर कार्य (1) युवा पीढ़ी को यह समाधान होगा। न अर्थ अधिकार नहीं-उत्तरदायित्व न अर्थ उपयोग नहीं-संपर्पण है और समाधान हिंसा नहीं-संवाद है। धर्म अत्यंतिक संस्थाओं की भूमिका भी अत्यंत है। सभी धर्म प्रेम, करुणा, अन्वय, सह-अस्तित्व का संदेश देते हैं। यदि त्थाएं युवा पीढ़ी को मानवीय मूल्यों, और संवाद की संस्कृति से जोड़ें, त्ाजिक विकृतियों को रोक जा सकता तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, महात्मा यामाई विवेकानंद जैसे चिंतकों ने संदेव माना और आत्मानुशासन को समाज की माना।

आज के घटनाओं ने हमें चेतावनी दी है। हम अभी नहीं चेते, तो रिश्तों का संकट संभूत है। आवश्यकता इस बात की है कि परिवार, समाज और राष्ट्र-नीतियों स्तरों की पुनर्स्थापना का अभियान चलाएं। संवाद बढ़े, युवाओं को निर्णय की साथ जिम्मेदारी का बोध कराया जाए, स्वीकृति पर संयम हो और सामाजिक-सांस्कृतिक को मजबूत बनाया जाए।

निक लापरवाही के कारण अस्पतालों, स्कूलों और वर्जनिक स्थलों पर आगजनी के प्रचुर दुर्घटनाओं के मर्मों की मौतें व्यवस्था के प्रति जनता के मन को तोड़ रही हैं। सामंदायिक तनाव, अकस्मिक कदरता, पहचान छिपाकर बनाए जा रहे संबंध, प्रेम के नाम पर छल और शोषण जैसी प्रवृत्तियाँ ही सामाजिक सौहार्द की नींव को कमजोर कर रही हैं। मौकितता, उपभोक्तावाद और अंधी प्रवृत्तियाँ की अंधी ने संयम, सादगी, त्याग और सामाजिक ज़िम्मेदारियों जैसे जीवन-मूल्यों को हाशिए पर धकेल दिया है। वहीं नरों का बढ़ता प्रचलन, अश्लीलता और समाज से काटकर हिंसा, अपराध और अहिंसा की अंधी ने और ले जा रही है। जब समाज के अस्तित्व अपने स्वार्थ, वासना और तात्कालिक हितों की हस्तक्षेप मानने लगे, तब रिश्ते साधना के सौंदर्य वन जाते हैं। ऐसी स्थिति में आवश्यक परिवार, शिक्षा, धर्म, मीडिया और शासन-संस्थाओं के मेलकर मानवीय मूल्यों, परदर्शिता, संवाद, सहिष्णुता और आपसीरिक्त समानता की संस्कृति को पुनर्जीवित करें। क्योंकि यदि मानवीय रिश्तों की आधार ही हिल गई, तो न केवल परिवार टूटेंगे, सामाजिक सौहार्द, राष्ट्रीय एकता और समाज का पूरा दायरा भी संकट में पड़ जाएगा।

प्रेरणा



राष्ट्र सर्वोपरि: जब चंद्रशेखर आज़ाद ने साधु बनने का भी निश्चय कर लिया

क्रांतियों का इतिहास संग्राम केवल युद्धों, आंदोलनों और क्रांतियों, विद्रोहों, बहिर्दलों और अद्वैत संकल्पों की गथा थी है, जिन्होंने एक गुलाम राष्ट्र को स्वतंत्रता का स्वर्णिम सूर्योदय दिखाया। इस समय में उनके ऐसे क्रांतिकारियों हुए, जिन्होंने अपने निजी जीवन, सुख-सुविधाओं और क्रांतिकारियों की चिंता किए बिना स्वयं को राष्ट्र के चरणों के समर्पित कर दिया। इन और बेमिसाल में चंद्रशेखर आजाद का नाम अद्वितीय है। उनका जीवन केवल वीरता और कर्तव्य की कहानी नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, त्याग और राष्ट्रभक्ति का जीवंत उदाहरण है। उनका जीवन का एक प्रमुख प्रमाण है, जो यह सिद्ध करता है कि सच्चा देशभक्त आजाद आवश्यकता पड़े पर अपना पूरा जीवन बदलने का तैयार हो सकता है।

चंद्रशेखर आजाद ने बहुत कम आयु में यह संकल्प ले लिया था कि उनका जन्म केवल भारत माता की स्वतंत्रता के लिए हुआ है। अंग्रेजी शासन के अत्याचारों के ज्वलंत तथ्यों में विद्रोही की ज्वाला प्रज्वालित कर देती थी। वे जानते थे कि विद्रोही शासन केवल हथियारों से नहीं, बल्कि भारतीयों के आत्मविश्वास को कुचक करके ही शासन कर पाएंगे। इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि वे अपने जीवन का प्रत्येक क्षण स्वतंत्रता संग्राम को समर्पित करेंगे। उनका यह संकल्प इतना दृढ़ था कि वह उन्होंने इसे अपने जीवन की "आजाद" नाम दी यह प्रतिज्ञा की कि अंग्रेज उन्हें कभी जीवित नहीं पकड़ पाएंगे।

क्रांतिकारियों संगठन चलाना अत्यंत कठिन कार्य था। गुप्तता, सतर्कता, हथियारों की व्यवस्था, साथियों के निगरान और अंग्रेजी पुलिस से बचने के लिए धन की आवश्यकता थी। अंग्रेजों की क्रांतिकारी अत्यंत साधारण परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करते थे। क्रांति

भार भावन तक का प्रबंध करना कठिन हो जाता था, लेकिन उनके मन में राष्ट्रसेवा का उत्साह कभी कम नहीं हुआ। उन्होंने वे जातें थीं जिनका समाधान केवल स्वतंत्रता संग्राम को मिले दाता कठिन होगा।

इन्हीं दिनों क्रांतिकारी रामकृष्ण खत्री के पास गाजीपुर के एक प्रसिद्धित महंत का संदेश आया। महंत वृष्य और अरक्ख्य थे तथा अपने मत के लिए एक वीर्य, ईमानदार और सच्चरित्र उत्तराधिकारी की तलाश में थे। उन्होंने रामकृष्ण खत्री से अनुरोध किया कि यदि उनका संदेश अपने मन में कोई ऐसा युक्त हो, तो उसे मत का शिष्य बनाकर सम्पूर्ण व्यवस्था सौंप दी जाए।

जब यह प्रस्ताव क्रांतिकारियों के बीच पहुँचा, तब सभी इसे सामान्य धार्मिक विषय मानकर आगे बढ़ गए। किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि चंद्रशेखर आजाद स्वयं इस कार्य के लिए आगे आएँ। लेकिन जैसे ही उन्होंने मत की संसति और उसके भीषण की चर्चा सुनी, उन्होंने बिना किसी संकोच के कहा कि यदि आवश्यकता हो तो वे स्वयं महंत के शिष्य बनने के लिए तैयार हैं।

रामकृष्ण खत्री इस बात को सुनकर सचिंत रह गए। उन्होंने आजाद को समझाया कि साधु बना कर कोई सामान्य बात नहीं है। इसके लिए सिर मुड़वाना होगा, धार्मिक दीक्षा लेनी होगी, कठोर अनुशासन का पालन करना होगा और मत की सेवा में जीवन बिताना होगा। एक सक्रिय क्रांतिकारी के लिए यह विच्युल अलग जीवन था।

लेकिन चंद्रशेखर आजाद के मन में केवल एक विचार था—भारत की स्वतंत्रता। उन्होंने अंतर्गत गंभीरता से उत्तर दिया कि यदि मत की संसति किसी प्रकार क्रांतिकारी संगठन के कार्य में आ सके, तो यह देश के

होती अर्थात् उपयोगी होना। उन्होंने कहा कि समष्टि का पथ धन को आवश्यक नहीं है और यह अर्थिक शक्ति बढ़ेगी। उन्होंने आंदोलन को भी नई गति मिलेगी। उन्हें लिखिए साधु बनना व्यक्तिगत इच्छा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्रेम अर्थात् जाने को जाने हुए रणनीति थी।

इस सफर को सफर होता है कि चंद्रशेखर आजाद केवल सहायसी योद्धा ही नहीं, बल्कि दूसरी योजनाकार भी थे। उन्होंने ये समझते थे कि किसी भी आंदोलन को केवल उसी नेतृत्व से, सफल संसाधनों, संगठन और सुविचारों के बिना योजना में परलता मिलती है। वे व्यक्तिगत सुधारों का अपेक्षा राष्ट्रीय आवश्यकता को अधिक महत्व देते थे।

महंत के समान तुम्हारा परिचय किस रूप में करायेंगे? आजाद ने सुनकर भाव से उत्तर दिया—“एक कवि के रूप में।”

महंत ने सुनकर खत्री जी ने हैसियत हारू पक्षा कि यहाँ महंत कविता सुनाने के लिए कह रहे थे। कविता के अलावा चंद्रशेखर आजाद ने जो उत्तर दिया, वह आराधना प्रेरण का प्रेत है। उन्होंने कहा—“यदि देश की आजादी के लिए मैं क्रांतिकारी बन सकता हूँ, तो कवि भी बन सकता हूँ, और क्या तुम नहीं जानते कि कलम का शस्त्रालय को भी बड़ा शस्त्र होती है?”

महंदा वाक्य केवल एक उत्तर नहीं था, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता के सभी की पुरी विचारधारा का सार था। भारतीयों की आजादी केवल बुंदों और बमों से नहीं मिलेगी बल्कि कवियों, लेखकों, पत्रकारों और विचारकों के लेखनी ने भी लाखों भारतीयों के मन में स्वतंत्रता के ज्वाला प्रज्वलित की। सहित्य ने सोए हुए समाज के अंधारों, आत्मसम्मान का भाव पैदा किया और गुलाम के विरुद्ध जनचेतना का निर्माण किया।

चंद्रशेखर आजाद यह भीलौ-भीलौ समझाते थे कि तलवार शरीर को घायल कर सकती है, लेकिन किचन पुरे समाज को बदल सकता है। इसलिए उन्होंने विचार और शस्त्र दोनों को समान महत्व दिया। आवश्यकता पड़ने पर वे बंदूक उठाने को भी तैयार थे और आवश्यकता पड़ने पर कविता लिखकर लोगों के मन में क्रांति की लौ जलाने को भी।

उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी—परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढाल लेना। वे किसी पह, पहचान या भूमिका से बंधे नहीं थे। यदि शक्तिहीन में किसम बनना पड़े तो तैयार, साधु बना पड़े तो तैयार, कवि बनना पड़े तो तैयार और यदि आवश्यकता हो तो अपने प्राणों का बलिदान देने के लिए भी सदैव तैयार। यही सच्चे राष्ट्रसेवकों के पहचान होती है।

आज के समय में जब देशभक्ति को केवल नारों तक सीमित कर दिया जाता है, तब चंद्रशेखर आजाद का जीवन हमें सिखाता है कि राष्ट्रप्रेम बना, अतुषार समान और कर्तव्यनिष्ठता से सिद्ध होता है। उन्होंने कभी अपने लिए कुछ नहीं माँगा। उनका समना केवल इतना था कि भारत स्वतंत्र हो। उनकी आसों वाली पीढ़ियाँ समानपूर्वक जीवन जी सके। उनकी सोच यह थी कि सिखाती है कि किसी भी बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केवल साहस पर्याप्त नहीं होता। बुद्धिमाना, धैर्य, रणनीति और परिस्थितियों का सही उपयोग भी उतना ही आवश्यक है। यदि उन्होंने केवल भ्रान्तियों में बहकर निर्णय लिए होते, तो शाहद वे इतने प्रभावशाली क्रांतिकारी नहीं बन पाते। उनकी दूरदर्शिता ही उन्हें अपने समकालीन अनेक क्रांतिकारियों से अलग बनाती है। 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अरुंधत पार्क में जब अंग्रेजों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया, तब भी उन्होंने अपना संकल्प नहीं तोड़ा।

राह पर

वर्ष 2027 के विधानसभा चुनावों के दृष्टिगत उत्तर प्रदेश में सभी राजनैतिक दलों ने अपनी चुनावी तैयारियों और मुद्दों को अंतिम रूप देना प्रारंभ कर दिया है। इसी क्रम में भारतीय जनता पार्टी ने अपनी बसुप्रतीक्षित कार्यकारिणी भी घोषित कर दी है। माना जा रहा है कि भाजपा की यह टीम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व केंद्रीय नेतृत्व की पसंद से चुनी गई है किन्तु इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भी महती भूमिका है। भाजपा ने अपनी नई टीम में सामाजिक सन्तुलन साधने के साथ ही सपा के पीडीए व बसपा के ब्राह्मण कार्ड को रोकने का प्रबंध किया है। अब चुनाव केवल सामाजिक समीकरण के बल पर ही नहीं जीते जाते इसलिए भाजपा ने अपनी टीम की संरचना से यह भी स्पष्ट किया है कि वह चुनावी दंगल बुद्ध स्तर पर आकर ही लड़ेगी। भाजपा अब अपने बुद्ध प्रबंधन को सशक्त करने के लिए काम करेगी जिसके

भाजपा

क्षेत्र में राम किशोर साहू अध्यक्ष बने हैं। काशी क्षेत्र के अध्यक्ष अशोक चौरसिया बनाए गए हैं। अवध के क्षेत्रीय अध्यक्ष अवधेश द्विवेदी बने हैं। गोरखपुर क्षेत्र की कमना विनोद राय को मिली है। भी भूमिहार हैं। प्रदेश में 19 उपाध्यक्ष बनाए गए हैं और इनमें भी ओबीसी वर्ग को प्राथमिकता दी गई है। 8 महामंत्रियों की सूची में भी 4 ओबीसी वर्ग के हैं।

इतिहास

प्रदेश भाजपा कार्यकारिणी के चयन में सामाजिक संतुलन के साथ-साथ क्षेत्रीय संतुलन साधने का प्रयास भी किया गया है। सपा छोड़कर भाजपा में शामिल हुई पूजा पाल को प्रयागराज में जिम्मेदार दी गई है। एक समय प्रयागराज में माफिया और अहमद का आतंक था और उस पुर पूजा पाल के पति राजू पाल की हत्या का आरोप था। भाजपा ने अपनी कार्यकारिणी के माध्यम से दलित गैर-जाटव समाज

समग्र हिंदुत्व की राह पर भाजपा

वर्ष 2027 के विधानसभा चुनावों के दृष्टिकोण से राज्य में सभी क्षेत्रों में राम किशोर साहू अध्यक्ष बने हैं। काशी क्षेत्र के अध्यक्ष

राजनैतिक दलों ने अपनी चुनावी तैयारियों और मुद्दों को अंतिम रूप देना प्रारंभ कर दिया है। इसी क्रम में भारतीय जनता पार्टी ने अपनी बहुप्रतीक्षित कार्यकारिणी भी घोषित कर दी है। माना जा रहा है कि कि जाजपा की यह टीम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व केंद्रीय नेतृत्व की पसंद से चुनी गई है किन्तु इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भी महती भूमिका है। जाजपा ने अपनी नई टीम में सामाजिक सन्तुलन साधने के साथ ही सपा के पीडीए व बसपा के ब्राह्मण काई को रोकने का प्रबंध किया है। अब चुनाव केवल सामाजिक समीकरण के बल पर ही नहीं जीते जाते इसलिए जाजपा ने अपनी टीम की संरचना से यह भी स्पष्ट किया है कि वह चुनावी दंगल बृथ स्तर पर आकर ही लड़ेगी। जाजपा अब अपने बृथ प्रबंधन को संशक्त करने के लिए काम करेगी जिसके

अशोक चारसिया बनाए गए हैं। अवध के क्षेत्रीय अध्यक्ष अवधेश क्रिवाने बने हैं। गोरखपुर क्षेत्र की हिमालय विनोद राय को मिली है जो भूमिहार हैं। प्रदेश में 19 उपाध्यक्ष बनाए गए हैं और इनमें भी ओबीसी वर्ग को प्राथमिकता दी गई है। 8 महामंत्रियों की सूची में भी 4 ओबीसी वर्ग के हैं। इतिहास

प्रदेश भाजपा कार्यकारिणी के चयन में सामाजिक संतुलन के साथ-साथ क्षेत्रीय संतुलन साधने का प्रयास भी किया गया है। सपा छोड़कर भाजपा में शामिल हुई पूजा पाल को प्रयागराज में जिम्मेदार दी गई है। एक समय प्रयागराज में माफिया अतीक अहमद का आतंक था और उस पर पूजा पाल के पति राजू पाल की हत्या का आरोप था। भाजपा ने अपनी कार्यकारिणी के सदस्यों से दलित गैर-जाटव समुदाय

अपवित्र संस्कृति का मूल आधार यदि कहें सक
शब्द में व्यक्त किया जाये तो वह शब्द है—
भक्ति। भक्ति मनुष्य को स्वयं का बोध कराता है,
कर्म उसे कर्तव्य का मार्ग दिखाता है, योग उसे
आत्मसंयम सिखाता है, लेकिन भक्ति वह इंद्रिय
है जो सीधे जीवन्मुक्ति को परमात्मा से जोड़
देती है। भक्ति केवल पूजा-पाद, मंदिर जाने या
भजन करने का नाम नहीं है, बल्कि वह जीवन के
प्रत्येक क्षण में ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव
करने की क्षमता है। जब मनुष्य का मन, बुद्धि,
वाणी और कर्म ईश्वर को समर्पित हो जाते हैं, तब
मनुष्य का वास्तविक जीवन होता है। इसलिए संसार
में कहा है कि भक्ति वह अमृत है, जो संतों के
मुख से वेष्य को भी मधुर बना देता है।

शब्दाज्ञे में कहा गया है कि मनुष्य का जीवन
अनेकानेक प्रकार के संघर्षों, इच्छाओं का जोड़न
है, और उनका उत्तर-चक्रवर्त्त से भरा हुआ है। भय, पद,
प्रतिष्ठा और वैभव प्राप्त करने के बाद भी
मनुष्य के भीतर एक खालीपन बना रहता है।
यह खालीपन किसी भी भक्ति संस्तु से नहीं भर
सकता। इसे केवल ईश्वर का प्रेम भर सकता
है। यही प्रेम जब समर्पण का रूप ले लेता है,
तब वह भक्ति कहलाता है। भक्ति मनुष्य को
वह अमृत कराता है कि वह अशक्त नहीं है।
प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वर उसके साथ हैं और
वही उसके जीवन के वास्तविक आधार हैं।

भक्ति का सामान्य अर्थ है—प्रेमपूर्ण ईश्वर की
अभिराग प्रहण करना। संस्कृत में “भज” धातु से

बना" भक्ति शब्द सच्चा, प्रेम, श्रद्धा और समर्पण का धोतक है। जिस मनुष्य किसी स्वार्थ के बिना भगवान को अपना सर्वस्व मान लेता है, तब वह सच्चा भक्त कहलाता है। ऐसी भक्ति में कोई व्यापार नहीं होता। भक्त यह नहीं करता कि मुझे इतना धन दो, इतना सुख दो या मेरी सभी इच्छाएँ पूरी कर दो। वह केवल इतना कहता है—"हे प्रभु! मुझे अपनी इच्छा के अनुसार चलने की शक्ति प्रदान करे"।

विद्यार्थी भक्ति का प्रथम चरण है। जिस प्रकार बीज के बिना वृक्ष उत्पन्न नहीं हो सकता, उसी प्रकार विद्यार्थी के बिना भक्ति विकसित नहीं हो सकती। जिस मनुष्य वह मान लेता है कि इस सृष्टि का संचालन किसी परम चेतना द्वारा हो रहा है और वही परम सत्ता उसके जीवन की संरक्षक है, तब उसके भीतर श्रद्धा का अंकुर फूटता है। यह श्रद्धा धीरे-धीरे प्रेम में बदलती है और प्रेम अंततः भक्ति बन जाता है।

कई बार लोग किन्हींनाइयों में ही भगवान को याद करते हैं। संकट समान होते ही उनका विश्वास भी कम हो जाता है। यह भक्ति नहीं, आवश्यकता है। सच्ची भक्ति सुख और दुःख दोनों में समान रहती है। भक्त भगवान को केवल संकटमोचक नहीं मानता, बल्कि अपने जीवन का आधार मानता है।

भावगत रूप में भक्ति के नौ स्वरूप बताए गए हैं, जिन्हें नवधा भक्ति कहा जाता है। ये हैं— श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन,

दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।
क्रिया का अर्थ है भगवान की कथा सुनना।
श्रवण का अर्थ है उन्के उपाणी का गान करना।
स्मरण का अर्थ है प्रत्येक क्षण उनका चिंतन करना।
पासेवेन भावना की सेवा का प्रतीक है।
हैं। अर्चना पूजा के माध्यम से श्रद्धा व्यक्त करना है।
चंदन नम्रापूर्वक प्रणाम करना है। दास्य
भाव में स्वयं को भावना का सेवेक मानना है।
सख्य भाव में उन्हें अपना मित्र समझना है और
आत्मनिवेदन का अर्थ है अपने सम्पूर्ण अस्तित्व
को ईश्वर के चरणों में समर्पित कर देना।
इन्मने से किसी एक मार्ग पर भी चक्कर मनुष्य
परमात्मा की कृपा प्राप्त कर सकता है। इसलिए
शास्त्र कहते हैं कि भक्ति के लिए विद्वान होना
आवश्यक नहीं, बल्कि सरल हृदय होना
आवश्यक है।
जहाँ प्रेम है, वहाँ भक्ति है। लेकिन यह प्रेम
संस्कार के प्रेम से भिन्न होता है। सांसारिक प्रेम
अपेक्षाओं पर आधारित होता है, जबकि ईश्वर
का प्रेम निःस्वार्थ होता है। भक्त भावना से कुछ
माँगता नहीं, बल्कि स्वयं को अर्पित कर देता है।
मीरा ने महलों का त्याग कर केवल श्रीकृष्ण को
अपनाया। श्रीहनुमान ने प्रभु श्रीराम की सेवा में
अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। प्रह्लाद
ने मृत्यु का भय भी स्वीकार कर लिया, लेकिन
भावना का नाम नहीं छोड़ा। इन सभी उदाहरणों
से स्पष्ट होता है कि सच्ची भक्ति में त्याग है,
विश्वास है और अटूट प्रेम है।

महत्त्वा का सबसे बड़ा शत्रु उसका अहंता मन है। क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या और अहंकार मन को निश्चित अशांत रखते हैं। भक्ति इन विकारों को धीरे-धीरे समाप्त करती है। जब मन भावान के नाम में लगता लगता है, तब तत्कालात्मक विचारों का प्रभाव कम होने लगता है। जैसे सूर्य निकलते ही अंधकार स्वतः समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार भक्ति का प्रकाश मन के अंधकार को दूर कर देता है।

भक्ति का अर्थ संसार से भागना नहीं है। इसका अर्थ संसार में रहते हुए भी ईश्वर से जुड़े रहना है। गृहस्थ, विद्यार्थी, व्यापारी, अंतर्द्वीक का किसान- कोई भी व्यक्ति अपने दैनिकी कार्य करते हुए भक्त बन सकता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में भी यही शिक्षा दी कि अपने कर्तव्य का पालन करते हुए मन को ईश्वर में स्थिर रखो।

आकर भक्ति का सबसे बड़ा शत्रु है। जहाँ "मैं" अधिक होता है, वहाँ भगवान के बलि स्थान कम हो जाता है। भक्त स्वयं को बहुत नहीं मानता। वह जानता है कि जो कुछ भी है, वह ईश्वर की कृपा से है। यही विमर्श उसे महान बनाती है। जिस दिश में मनुष्य वह स्वीकार कर लेता है कि वह केवल ईश्वर का एक साधन है, उसी दिश में उसके भीतर भक्ति का वास्तविक जन्म होता है।

आधुनिक विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि सकारात्मक भावनाएँ मनुष्य के मस्तिष्क और शरीर पर गहरा प्रभाव डालती हैं। निर्यतित प्रार्थना, ध्यान, जप और भजन से तनाव कम

होता है, मानसिक संतुलन बढ़ता है और जीवन के प्रति आशा उत्पन्न होती है। जब मनुष्य भवभाव के प्रति कुतूहल व्यक्त करता है, तब उसके भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संस्कार होता है। यही कारण है कि भक्त कठिन परिस्थितियों में भी टूटने नहीं, बल्कि और अधिक मजबूत बनकर उभरते हैं।

इसकी सच्ची पुष्टि केवल मंदिर में दीप जलाने से पूरी नहीं होती। यदि किसी भूखे को भोजन मिला, किसी दुखी को सौलाना मिली, किसी गरीब की सेवा हुई और किसी निपरा व्यक्ति को आश्रण मिला, तो यही सर्वोत्तम भक्ति है। संत बीरबल कहते हैं कि यदि ईश्वर को पाना है, तो पहले मनुष्य से प्रेम करना सीखो। सेवा में किया गया प्रत्येक कार्य भगवान तक पहुँचता है।

भक्ति किसी एक दिन में उत्पन्न नहीं होती। यह निरंतर अभ्यास और श्रद्धा से विकसित होती है। प्रतिदिन कुछ समय भगवान के नाम का जप करो। धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करो। सत्संग में जाओ। अपने जीवन में सत्य, करुणा और ईमानदारी को स्थान दें। भोजन करने से पहले ईश्वर का स्मरण करो। प्रत्येक सकलता के लिए उनका धन्यवाद करो और प्रत्येक कठिनाई को भी उनकी शिक्षा समझकर स्वीकार करो। धीरे-धीरे मन भगवान की ओर आकर्षित होने लगेगा।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भक्ति दिखावे से नहीं आती। ऊँची आवाज में भजन गाने से अधिक महत्वपूर्ण है कि मन भीतर से निर्मल हो।

बै-बड़ें यह करने से अधिक आवश्यक है कि किसी का दिल न दुखया जाए। भगवान् बाहरी आँसु नहीं, बल्कि हृदय की पवित्रता देखते हैं। भक्ति का अंतिम फल केवल सांसारिक सुख नहीं, बल्कि अलोकिक शान्ति है। भक्त को यह अनुभव होने लगता है कि जो कुछ भी वो रहा वह ईश्वर की योजना का भाग है। इसलिए वह परिस्थितियों से लड़ने के बजाय उन्हें समझने लगता है। उसके भीतर भीरु कम हो जाता है, क्योंकि उसे विश्वास होता है कि भगवान् हर समय उसके साथ हैं। वहीं विश्वास उसे जीवन की सबसे बड़ी शक्ति प्रदान करता है।

जब भक्ति अपने चरम पर पहुँचती है, तब भक्त और भगवान् के बीच कोई दूरी नहीं रहती। तब मंदिर केवल पथर की इमारत नहीं रह जाता, बल्कि भाव का हृदय हो जाता का निवास बन जाता है। उसकी प्रत्येक श्वास प्रार्थना बन जाती है, प्रत्येक कर्म पूजा बन जाता है और प्रत्येक क्षण ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव कराने लगता है।

अंततः भक्ति हमें यह सिखाती है कि जीवन का सबसे बड़ा धर्म भगवान् का प्रेम है। संसार की प्रत्येक वस्तु एक दिन समाप्त हो जाएगी, लेकिन ईश्वर से जुड़ा प्रेम कभी समाप्त नहीं होता। वही प्रेम मनुष्य को भय से मुक्त करता है, दुःख में धैर्य देता है, सफलता में विनम्रता देता है और अंततः उसे परम शान्ति तथा मोक्ष की ओर ले जाता है।

क्याँक अब प्रमुख राजनैतिक नैरेटिव युद्ध पारंपरिक और सोशल मीडिया दोनों पर लड़ा जाता है। चुनावी जंग जीतने में मीडिया व सोशल मीडिया भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पश्चिम बंगाल चुनावों में नैरेटिव युद्ध ने भाजपा की विजय में बड़ी भूमिका निभाई थी। भाजपा की नई कार्यकारिणी से यह बात भी साफ हो गई है कि के आगामी विधानसभा चुनाव मुख्यमंत्री दिग्विजय सिन्हा के चेहरे व हिंदुत्व की धर तेज करके ही लड़ा जाएगा। प्रदेश में योगी जी का "एक रहेंगे तो नेक रहेंगे" तत्व "बटोने तो कटोने" का नारा चलने वाला है। प्रदेश के आम हिन्दू जनमानस को योगी जी पर पूरा भरोसा है विशेषकर कानून व्यवस्था व नारी सुरक्षा आदि विषयों के कारण। प्रदेश अध्क्षक पंजक चौधरी की अध्यक्षता में सपा के पीडीए की कार्यकुंद करने का प्रयास किया गया है। राज्य में भाजपा के पण्डित 6 क्षेत्रों में विभाजित है। इनमें गठमन नवाब सिंह नागर को, ब्रज क्षेत्र में पूरन लाल लोधी तथा कानपुर

आध्यात्मिक बनाया गया ।
भाजपा की कार्यकारिणी से प्रतीत
हो रहा है कि भाजपा के तरकश
में अभी कई तीर छिपे हैं। यह बात
तो तय हो गई है कि अब भाजपा
समग्र हिंदुत्व की राजनीति करने
जा रही है। भाजपा व संघ द्वारा
अब प्रदेश में बंगाल की ही तरह
94 प्रतिशत हिंदू मतदाताओं को
एकजुट करने का प्रयास किया
जाएगा। भाजपा कार्यकारिणी
की सूची आते ही सपा, बसपा व
कांग्रेस की राजनीतिक हलचलें
भी तेज हो गई हैं। यह चर्चा भी
सूनी जा रही है कि भाजपा का
कई-कई नेतृत्व उत्तर प्रदेश सहित
कई राज्यों के चुनाव वर्ष 2026
के अक्टूबर- नवंबर में भी करवा
सकता है क्योंकि आगे जगनमो
का वृहद अभियान चलना है।
साथ ही भारतीय जनता पार्टी
पश्चिम बंगाल तथा असम सहित
कई राज्यों के निकाय चुनावों में
लगातार मिल रही सफलता से
उत्साहित है और अपनी विजय का
संवेग बनाए रखने के लिए एक
विपक्ष को तैयारी के लिए समय
नहीं देना चाहती।

गांधीनगर को देश का आदर्श ‘हरियाला लोकसभा क्षेत्र’ बनाने के उद्देश्य से केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री तथा सांसद श्री अमित शाह की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित हुई

▶▶ गांधीनगर संसदीय क्षेत्र में आगामी दिनों में 308 स्थानों पर आयोजित होगा महावृक्षारोपण तथा अहमदाबाद में बनाए जाएंगे 101 ऑक्सीजन पार्क

▶▶ ग्रीन कवर बढ़ाने के लिए श्री अमित शाह के सुझाव के अनुसार सभी 101 ऑक्सीजन पार्कों का ऑनलाइन विवरण एक क्लिक पर मिलेगा, सोसाइटियों और जीआईडीसी क्षेत्रों में होगा सघन वृक्षारोपण

▶▶ वन विभाग द्वारा 60 लाख पौधे लगाकर 82 ‘वन कवच’ बनाए जाएंगे

▶▶ गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में 1 करोड़ 26 लाख से अधिक पेड़ लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया

▶▶ जन भागीदारी बढ़ाने के लिए टेनामेंट, रॉ-हाउस और बंगले वाले परिवारों को प्रति घर एक निःशुल्क पौधा दिया जाएगा

गांधीनगर : गांधीनगर को देश का सर्वश्रेष्ठ एवं मॉडल ‘हरियाला लोकसभा क्षेत्र’ बनाने तथा आगामी पीढ़ी को स्वच्छ पर्यावरण देने के उम्दा उद्देश्य के साथ वर्ष 2026-27 के दौरान विशाल स्तर पर वृक्षारोपण महाअभियान का आयोजन किया गया है। इस संदर्भ में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में शनिवार को अहमदाबाद में उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी तथा मुख्य सचिव श्री मनोज कुमार दास उपस्थित रहे।

इस महाअभियान अंतर्गत आगामी 12 जुलाई, 2026 को प्रशासन एवं जन भागीदारी के सहयोग से गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के कुल 308 निर्धारित स्थानों पर बड़े पैमाने पर विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसके अंतर्गत वन विभाग द्वारा 60 लाख से



अधिक पेड़-पौधे लगाकर 82 वन कवच बनाने का सुदृढ़ आयोजन किया गया है। अहमदाबाद महानगर पालिका (एमएमसी) द्वारा (गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में) 31.43 लाख, अहमदाबाद जिले में 9 लाख, गंधीनगर महानगर पालिका (जीएमसी) द्वारा 6.27 लाख, गांधीनगर जिला प्रशासन

गया है, जो गत वर्ष की तुलना में दुगुना है। इसके अंतर्गत लगभग 121 सामाजिक एवं स्वैच्छिक संस्थाओं, बैंकों तथा औद्योगिक संस्थाओं द्वारा 28.50 लाख पेड़-पौधे लगाने और उनके संरक्षण की जिम्मेदारी स्वीकार की गई है। इस महाअभियान में 2.33 लाख से अधिक स्वयंसेवक सहभागी होंगे। बैठक में एक महत्वपूर्ण निर्णय के अंतर्गत अहमदाबाद मनपा द्वारा नगरजनों के लिए शीघ्र ही 101 ऑक्सीजन पार्क लोकार्पित किए जाएंगे। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने इन सभी ऑक्सीजन पार्कों का विवरण फोटो, वीडियो तथा जीपीएस लोकेशन के साथ वेबसाइट पर लिंक करने का सुझाव दिया है, जिससे नागरिकों को एक क्लिक पर ऑनलाइन इंडेक्स द्वारा सभी जानकारी मिल सके। इन ऑक्सीजन पार्कों में वॉकिंग ट्रैक, गैलाग (जीआईडीसी) द्वारा 1 लाख आदि निमाकर कुल 1 करोड़ 26 लाख से अधिक पेड़-पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया

अभियान को अधिक व्यापक बनाने के लिए प्रशासन द्वारा की गई माइक्रो-प्लानिंग के अनुसार 50 से अधिक पेड़-पौधे लगाए जा सकें, ऐसी आवासीय सोसाइटियों तथा सभी जीआईडीसी क्षेत्रों में प्रदूषणमुक्त वातावरण देने के लिए सघन वृक्षारोपण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, सड़कों के मीडियन, डम्प साइट्स, रिक्त सरकारी प्लॉट्स तथा रेलवे ट्रैक के आसपास की खुली भूमि पर बुवाई कर ग्रीन कवर बढ़ाया जाएगा। इस अभियान में मियावाकी पद्धति, डेंस प्लॉटेशन जैसी आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग होगा और वन विभाग द्वारा 60 लाख पौधे लगाकर 83 ‘वन कवच’ बनाए जाएंगे। प्रधानमंत्री की प्रेरणा से प्रारंभ किए गए ‘एक पेड़ माँ के नाम 2.0’ अभियान अंतर्गत जन भागीदारी बढ़ाने के लिए टेनामेंट, रॉ-हाउस तथा बंगले वाले परिवारों को प्रति घर एक निःशुल्क पौधा दिया जाएगा और अग्रणी संस्थाओं द्वारा कॉर्पोरेट-सोशल

रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) अंतर्गत लाखों पेड़ों के संरक्षण एवं पालन-पोषण की जिम्मेदारी स्वीकार की गई है। इस समीक्षा बैठक में विधायक तथा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा, स्थानीय विधायक, शहरी विकास विभाग के सचिव श्री एम. थेनारसन, वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री विनोद राव, सड़क एवं भवन (आरएण्डबी) विभाग के सचिव श्री पी. आर. पटेलिया, हेड ऑफ द फॉरेस्ट फोर्स की जयपाल सिंह, मुख्यमंत्री के विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी) श्री धीरज पारेख, अहमदाबाद मनपा आयुक्त श्री ब्रंछानिधि पाणि, अहमदाबाद जिला कलेक्टर श्री भव्य वर्मा, गांधीनगर जिला कलेक्टर श्री रवींद्र खताले तथा औडा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीओ) श्री मीरान्त परीख सहित वरिष्ठ अधिकारी और अहमदाबाद एवं गांधीनगर जिला भाजपा अध्यक्ष सहित पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रोत्साहक उपस्थिति में अहमदाबाद के शेला में ‘श्री नित्य शांति भवन’ का लोकार्पण सम्पन्न

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▶▶ प्रधानमंत्री ने ‘विकास भी, विरासत भी’ के मंत्र के साथ आधुनिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय किया

▶▶ प्रधानमंत्री ने पाली एवं प्राकृत भाषाओं को ‘क्लासिकल लैंग्वेज’ का दर्जा देकर जैन साहित्य के अमूल्य ग्रंथों के संरक्षण का भगीरथ कार्य किया

▶▶ भौतिक सुख-सुविधाओं से ऊपर एक ऐसी सुख-शांति है, जो आध्यात्मिक मार्ग से ही प्राप्त होगी

▶▶ आध्यात्मिकता तथा आधुनिकता के समन्वय से ही लोककल्याण की नई राह उकेरी जा सकेगी : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▶▶ मुख्यमंत्री ने संतों तथा साधु-भगवंतों के आशीर्वाद से सभी से साथ मिलकर ‘विकसित भारत@2047’ के निर्माण के लिए कटिबद्ध होने का आह्वान

▶▶ राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराजा की निश्रा में महोत्सव आयोजित हुआ, शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला की उपस्थिति



शांति की कुंजी बताया। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता तथा आधुनिकता के समन्वय से ही लोककल्याण की नई राह उकेरी जा सकेगी। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराज के मार्गदर्शन में निर्मित यह भवन आधुनिक सुविधाओं के साथ चेतना केन्द्र बनेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सुशासन के 12 वर्ष का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि देश में ‘विकास भी, विरासत भी’ के मंत्र के साथ प्रगति हो रही है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व से लेकर भारतीय संस्कृति के गौरव की विश्वभर में पुनर्स्थापित करने का ऐतिहासिक कार्य प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में सकारा हुआ है। जैन धर्म के सेवा एवं जीवदया के मूल्यों पर बल देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि जैन समाज में हजारों वर्षों से जनसेवा की अनूठी महिमा रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री के करकमलों से गांधीनगर के कोबा में हाल ही में लोकार्पित संग्रिति म्यूजियम का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने पाली एवं प्राकृत भाषाओं को ‘क्लासिकल लैंग्वेज’ का दर्जा देकर भी’ के मंत्र के साथ प्रगति हो रही है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व से लेकर

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए पानी बचाने, स्वच्छता, ‘लोकल फॉर लोकल’ तथा प्राकृतिक खेती जैसे संकल्पों को जीवनशैली बनाने का आह्वान किया। श्री पटेल ने संतों और साधु-भगवंतों के आशीर्वाद के साथ सभी से साथ मिलकर ‘विकसित भारत@2047’ के निर्माण के लिए कटिबद्ध होने का अनुरोध किया। राष्ट्रसंत पूज्य पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराज ने अपने आशीर्चन में ऐतिहासिक उदाहरणों तथा प्राचीन प्रसंगों द्वारा दान, परोपकार एवं जीव-दया का मर्म समझाया। उन्होंने सभी को कर्मबंधन से मुक्त होने के लिए त्याग, समर्पण तथा गरीब-जूरुतरमंद लोगों की सेवा द्वारा संपत्ति के सदुपयोग का मार्ग अपनाने का बोध दिया। उल्लेखनीय है कि इस नवनिर्मित भवन में भव्य प्रभु चैत्य के अतिरिक्त साधु-साध्वीजियों के लिए उपाश्रय, व्याख्यान हॉल, आयुर्विदशाला, बच्चों और युवाओं के लिए पाठशाला एवं ज्ञानशाला, यात्रियों के लिए धर्मशाला तथा सुकृतशाला सहित आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। इस अवसर पर आयोजक वारा परिवार के सदस्य, राष्ट्रीय व्यापार कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष श्री सुनील सिंघी, विभिन्न जैन संघों के अग्रणी, श्रेष्ठगण तथा बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।



वेस्टर्न रेलवे एडवेंचर एंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन (WRASA), मुंबई सेंट्रल मंडल ने उत्तराखंड हिमालय के प्रसिद्ध पिंडारी ग्लेशियर ट्रेक को सफलतापूर्वक पूरा किया। यह अभियान पश्चिम रेलवे द्वारा अपने कर्मचारियों के बीच एडवेंचर स्पोर्ट्स, शारीरिक फिटनेस तथा टीम भावना को प्रोत्साहित करने की निरंतर प्रतिक्रिया का परिचायक है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञापन के अनुसार, मुंबई सेंट्रल मंडल के नेतृत्व में 12 सदस्यीय दल ने लगभग 12,300 फीट की ऊँचाई पर स्थित पिंडारी ग्लेशियर ट्रेक का चुनौतीपूर्ण हाई-एल्टीट्यूड ट्रेक सफलतापूर्वक पूरा किया। घने जंगलों, अल्पाइन घास के

मैदानों, बर्फाली धाराओं तथा हिमाच्छादित पगडंडियों से होकर गुजरते हुए दल ग्लेशियर के आधार तक पहुँचा, जहाँ से नंदा देवी एवं नंदा कोट पर्वत शिखरों के मनोहारी दृश्य दिखाई दिए। इस अभियान ने दल के सदस्यों के धैर्य, अनुशासन, दृढ़ संकल्प तथा आपसी सहयोग की भावना को उजागर किया। अभियान दल में पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल से श्री सुरेन्द्र सोनी, श्री श्रीनेश अची, श्री विनय पोरवाल, श्री अविनाश सारुवे, श्री रामबचन सिंह, श्री दिनेश यादव, श्री अरुनीश यादव, श्री रामावतार शर्मा, श्री प्रियेश सिंह एवं सुशील प्राची सोनी शामिल थे। इनके अतिरिक्त पश्चिम मध्य रेलवे से श्री शैलेन्द्र उड़के तथा श्री. एम. पी. खरे भी अभियान दल का हिस्सा रहे।

अभियान की सफलता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री सुरेन्द्र सोनी ने कहा कि यह ट्रेक आत्म-खोज की एक प्रेरणादायक यात्रा रही, जिसने साहस, टीमवर्क एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता को और अधिक सुदृढ़ किया तथा हिमालय एवं प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान विकसित किया। वेस्टर्न रेलवे एडवेंचर एंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन समय-समय पर रेल कर्मचारियों के लिए ट्रेकिंग, पर्वतारोहण तथा अन्य साहसिक खेलों का आयोजन करती रहती है, ताकि उनमें शारीरिक फिटनेस, आउटडोर कौशल एवं टीमवर्क की भावना को बढ़ावा मिले। आगामी सत्र में भी एसोसिएशन द्वारा ऐसे अनेक साहसिक अभियानों का आयोजन किया जाएगा।

पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल ने “नशा मुक्त भारत अभियान” के तहत चलाया व्यापक जन-जागरूकता अभियान, रेलवे कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को स्वस्थ एवं नशामुक्त जीवनशैली अपनाने के लिए किया प्रेरित

अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य दुरुपयोग एवं अवैध तस्करी विरोधी दिवस (26 जून) के उपलक्ष्य में पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल द्वारा 17 जून से 26 जून, 2026 तक “नशा मुक्त भारत अभियान” का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में आयोजित इस दस दिवसीय अभियान का उद्देश्य रेलवे कर्मचारियों, उनके परिवारजनों तथा स्थानीय समुदाय में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा स्वस्थ एवं नशामुक्त जीवनशैली को प्रोत्साहित करना था। इस वर्ष

अभियान की थीम “नशा मुक्त भारत अभियान – विकसित भारत की पहचान” रही। अभियान के अंतर्गत मंडल रेलवे चिकित्सालय, भावनगर के साथ-साथ जेतलसर, वेरावल, धोला, जूनागढ़, पोरबंदर एवं बोटाद स्थित स्वास्थ्य इकाइयों तथा संबंधित रेलवे कॉलोनिजों में विभिन्न जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को शराब, तंबाकू, गुटखा तथा अन्य मादक पदार्थों के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दुष्प्रभावों की विस्तृत जानकारी प्रदान



की गई। रेलवे कॉलोनिजों में स्वास्थ्य विभाग की टीमों द्वारा डोर-टू-डोर जनसंपर्क अभियान चलाकर लोगों को नशा छोड़ने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा परिवार एवं समाज में सकारात्मक वातावरण बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। इस दौरान नशा मुक्ति संबंधी फैमिलेट एवं जागरूकता साहित्य का भी वितरण किया गया। अभियान के दौरान मंडल के विभिन्न स्वास्थ्य केंद्रों पर चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य निरीक्षकों द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता व्याख्यान (Health Talks) आयोजित किए गए। इन

कार्यक्रमों में प्रतिभागियों को नशे से होने वाले गंभीर दुष्परिणामों, बचाव के उपायों तथा नशामुक्त जीवन के लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही उपस्थित कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों को नशे से दूर रहने एवं समाज को नशामुक्त बनाने की शपथ भी दिलाई गई। जन-जागरूकता को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से मंडल रेलवे चिकित्सालय एवं सभी स्वास्थ्य इकाइयों में आकर्षक पोस्टर एवं बैनर प्रदर्शित किए गए। इसके अतिरिक्त, नशा छोड़ने के इच्छुक व्यक्तियों को उपलब्ध चिकित्सा उपचार, परामर्श

सेवाओं तथा पुनर्वास संबंधी सहायता की जानकारी भी उपलब्ध कराई गई। पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल का यह अभियान कर्मचारियों एवं उनके परिवारों में नशे के प्रति जागरूकता बढ़ाने, स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करने तथा समाज में नशामुक्त वातावरण के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावी पहल सिद्ध हुआ। मंडल प्रशासन ने सभी कर्मचारियों एवं नागरिकों में “नशा मुक्त भारत – विकसित भारत” के संकल्प को सकार करने हेतु सक्रिय सहभागिता निभाने का आह्वान किया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने भावनगर परा में निर्माण एवं विकास कार्यों का किया गहन निरीक्षण

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने शनिवार, 27 जून, 2026 को भावनगर परा क्षेत्र में प्रगति पर चल रहे विभिन्न विकास एवं आधारभूत संरचना संबंधी कार्यों का गहन निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने एल.सी. नं. 218 पर निर्माणधीन रोड अंडर ब्रिज (RUB), रेलवे कॉलोनी, रेलवे कर्मचारियों के बच्चों के लिए पुनर्जीवित किए जा रहे बाल रेल उद्यान, निर्माणधीन टेनिस कोर्ट तथा अधिकारी विश्राम गृह में चल रहे मरम्मत एवं उन्नयन कार्यों का विस्तृत अवलोकन किया। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि मंडल रेल प्रबंधक ने निरीक्षण के दौरान सभी निर्माण कार्यों की प्रगति, गुणवत्ता तथा निर्धारित संरक्षा मानकों के अनुपालन की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी कार्य उच्च गुणवत्ता मानकों के अनुरूप निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किए जाएं, ताकि कर्मचारियों एवं यात्रियों को बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकें। श्री वर्मा ने रेलवे कॉलोनिजों एवं अन्य परिसरों में स्वच्छ, सुरक्षित एवं हरित



वातावरण विकसित करने पर विशेष बल देते हुए सड़क किनारे उपलब्ध रिक्त स्थानों तथा पुनर्जीवित किए जा रहे बाल रेल उद्यान के पैदल मार्गों के किनारे व्यापक वृक्षारोपण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि हरित वातावरण न केवल पर्यावरण संरक्षण में सहायक है, बल्कि कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के लिए बेहतर जीवन-परिवेश भी सुनिश्चित

करता है। निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक ने अधिकारियों को यात्रियों को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सभी विकास कार्यों में संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने तथा कार्यों की नियमित निगरानी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे आपसी समन्वय,

टीम भावना एवं कार्यकुशलता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए भावनगर मंडल को उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों तक पहुँचाने में सक्रिय योगदान दें। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक् शर्मा के साथ भावनगर मंडल के विभिन्न विभागों के शाखा अधिकारी एवं संबंधित कर्मचारी उपस्थित रहे।

गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र के लोकप्रिय सांसद एवं केन्द्रीय गृह तथा सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक आयोजित हुई

▶▶ केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने किसानों को आर्थिक रूप से अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए प्रत्येक किसान को कम से कम दो पशुधन उपलब्ध कराने का सुझाव दिया

▶▶ श्री अमित शाह का बेटियों का ड्रॉपआउट रेशियो कम करने के लिए प्रति 3-4 गाँव एक क्लस्टर स्कूल बनाने तथा 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को तत्काल पीएमजेएवाई कार्ड देने का आदेश

गांधीनगर : गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र के सांसद तथा केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रेरक उपस्थिति में शनिवार को गांधीनगर में जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में केन्द्र सरकार प्रायोजित विभिन्न प्लेगिशन योजनाओं की प्रगति तथा जिले के विकास कार्यों की सर्वग्राही समीक्षा की गई। बैठक में सांसद, जिले के विधायक, जिला कलेक्टर, जिला विकास अधिकारी, जिला, तहसील पंचायत और नगर पालिकाओं के अध्यक्ष तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि जिलों में केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के क्रियान्वयन पर निगरानी के लिए केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा दिशा समितियों का गठन किया गया है। विकास कार्यक्रमों की प्रगति की मॉनिटरिंग, उनका कार्यक्रम एवं प्रभावी क्रियान्वयन हो; यह सुनिश्चित करने में दिशा समितियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। श्री अमित शाह ने सभी विभागों के कार्यों की सुसमन्वित समीक्षा करते हुए कहा कि जिले के खातेदार किसानों को आर्थिक रूप से अधिक सुदृढ़ बनाने तथा एक भी किसान पशुधन के बिना न रहे; इसके लिए तत्काल सर्वेक्षण कर प्रत्येक किसान खातेदार को कम से कम दो पशुधन

उपलब्ध कराने का सुझाव दिया। श्री शाह ने वर्षों में विलंब के कारण उत्पन्न हुई स्थिति से निपटने के लिए तत्काल कंटीजेंसी प्लान तैयार करने तथा अर्धसंचित क्षेत्रों का सर्वेक्षण शुरू कर उनका विवरण तैयार करने के भी निर्देश दिए। केन्द्रीय गृह मंत्री ने माध्यमिक शिक्षा विभाग में बेटियों का ड्रॉपआउट रेशियो घटाने के लिए तीन-चार गाँवों का एक क्लस्टर बनाकर नए विद्यालय का निर्माण करने के लिए सब्सिडी अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने जिले में विद्यार्थियों में पठन-पाठन का प्रभाव बढ़ाने के लिए नवनिर्मित लाइब्रेरियों के बारे में जागरूकता लाने और इन नए पुस्तकालयों को जिला स्तर की मुख्य लाइब्रेरी से कनेक्ट करने का कहा। इसके अतिरिक्त, उन्होंने गांधीनगर जिले में घरेलू गैस कनेक्शन, शौचालय, पेयजल एवं सिंचाई के पानी तथा बिजली जैसी सुविधाओं के अभाव वाले गाँवों की अमित शाह ने मुख्यमंत्री ग्राह सड़क योजना के संदर्भ में ‘गाँव’ शब्द की परिभाषा को अधिक स्पष्ट करने तथा कम से कम 35 से अधिक घर हों और विद्युत

कनेक्शन से युक्त हों; ऐसे उपक्षेत्रों/क्षेत्रों को मानदंडों में निर्धारित करने का कहा। श्री शाह ने जिले के 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत कार्ड अविलंब तथा शीघ्र उपलब्ध कराने के लिए युद्ध स्तर पर कार्य करने के कड़े निर्देश दिए। बैठक के प्रारंभ में जिला कलेक्टर श्री रवींद्र खताले ने स्वागत संबोधन कर केन्द्रीय गृह मंत्री तथा उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया। इस अवसर पर प्रशासन द्वारा गांधीनगर संसदीय क्षेत्र के सर्वोर्गीण विकास के लिए उठाए गए कदमों तथा भविष्य के आयोजन पर विस्तृत प्रेजेंटेशन भी दिया गया। इस उच्च स्तरीय ‘दिशा’ बैठक में सांसद सदस्य श्री हंसमुखभाई पटेल व श्री हरिभाई पटेल, विधायक श्रीमती रीताबेन पटेल, श्री अल्पेक्षभाई ठाकोर, श्री बलराजसिंह चौहान, श्री जयतीभाई पटेल, गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री राजेशभाई पटेल, तहसील पंचायत एवं नगरपालिकाओं के अध्यक्ष, मनपा आयुक्त, जिला विकास अधिकारी श्री हसरत जैस्मीन सहित वरिष्ठ पदाधिकारी और उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।